बनास जन

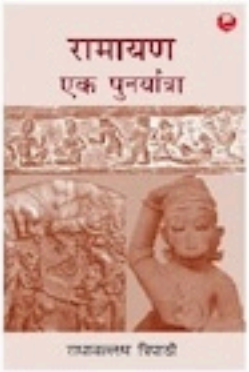

मध्यकालीन साहित्य का पाठ

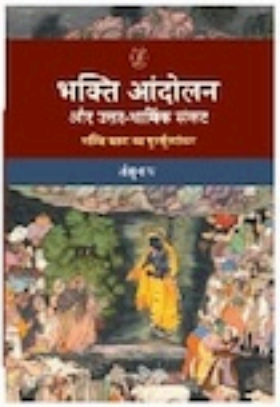

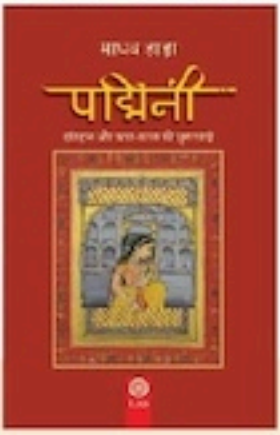

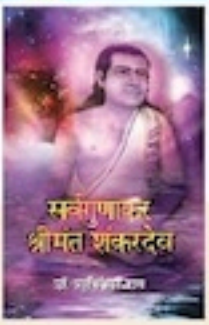

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

मध्यकालीन साहित्य का पाठ

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–75 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		4
कालजयी कवि और उनका काव्य संसार	श्याम सुशील	5
रामकथाओं से साक्षात्कार	लोकेश कुमार गुप्ता	21
सीता के सत्य की खोज	रविरंजन	25
चित्तौड़ की पद्मिनी : इतिहास और कथा-काव्य की अवैध बाँट	यवनिका तिवारी	29
महाकाव्य का पुनःपाठ	आनंद पांडेय	34
कबीर और भक्ति आंदोलन	संगीता कुमारी	39
पश्चिमी ज्ञानमीमांसा की भ्रांत स्थापनाओं का तार्किक निराकरण	विमलेश शर्मा	43
भक्ति आंदोलन की राहों से धार्मिक मुठभेड़ें	मृत्युंजय श्रीवास्तव	48
भक्ति की विचारधारा	प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	52
मुक्ति के विकल्प की तलाश	अनुपम कुमार	57
भक्ति कविता : थोपी हुई आधुनिकता के विरुद्ध	दिव्या तिवारी	62
लोकजागरण में मध्यकालीन कवि	नीलम सिंह	67
मध्यकालीन पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक नायक : श्रीमंत शंकर देव	अभिजीत सिंह	71
रीतिकाल के बहाने	प्रियंका शाह	75
महामति प्राणनाथ का सम्यक आकलन	तेजस्वरूप त्रिवेदी	80

अपनी बात

बनास जन के आलोचना पुस्तकों पर समीक्षा अंक के बाद यह मध्यकालीन साहित्य विषयक आलोचना पुस्तकों पर अंक है। मध्यकालीन साहित्य पर फिर फिर बात करना जरूरी है क्योंकि समकालीन साहित्य की परम्परा यहाँ से बनती है। आकस्मिक नहीं कि यूरोप के विद्वान लगातार इस साहित्य पर अध्ययन करते रहे हैं। इमरै बंघा की घनानन्द वाली किताब 'सनेह को मारग' हो या विनांद कैलवर्त और स्ट्रेटन हौली के भक्ति साहित्य सम्बन्धी अध्ययन। पुरानी पीढ़ी के यूरोपीय विद्वानों में जेम्स टॉड और हरमन गोएट्ज को भी कैसे भूलाया जा सकता है। यह ठीक है यूरोपीय विद्वानों का अध्ययन जिस औपनिवशिक दृष्टि से मिलता है उसमें अनेक आग्रह हैं और ज्ञान की इजारेदारी के खतरे भी। तब हमारी और अधिक जिम्मेदारी हो जाती है कि अपने पुराने साहित्य को हम अपनी आँख से देखें, समझें और पुनर्परिभाषित करते रहें।

दूसरी बात यह भी कहनी पड़ेगी कि हमारा वर्तमान अतीत के जिन सवालों से अभी तक उलझा हुआ है उन्हें इस साहित्य में अनेकशः सम्बोधित किया गया है। भारत और भारतीयता के स्वरूप को बार बार परिभाषित समझने के लिए भी इस साहित्य से होकर जाना पड़ेगा।

समकालीनता का आकर्षण तीव्र होता है क्योंकि समकालीन साहित्य को रच रहे लोग हमारे सामने होते हैं। सामने होने का सुख अपनी जगह है लेकिन अपनी विरासत को जाने-समझने बिना अपने समकाल की कैसी भी व्याख्या सटीक होना चुनौतीपूर्ण है।

यह अंक नयी पीढ़ी के पाठकों, शोधार्थियों और समीक्षकों के लिए एक अवसर देने का प्रयास है जब वे हाल फिलहाल में लिखी गई और तैयार की गई मध्यकालीन साहित्य विषयक आलोचना पुस्तकों से रूबरू हों। आकस्मिक नहीं है कि अपनी विरासत के प्रति नयी पीढ़ी में इस साहित्य के प्रति आकर्षण देखा जा रहा है। सुपरिचित विद्वान माधव हाड़ा द्वारा सम्पादित शृंखला 'कालजयी कवि और उनका काव्य' की लोकप्रियता इसका एक उदाहरण है। इस शृंखला की प्रारम्भिक दस पुस्तकों पर सुधी समीक्षक श्याम सुशील ने विस्तार से अंक में लिखा है। बनास जन के पिछले विशेषांकों 'आलोचना का परिदृश्य' तथा 'सूफ़ी काव्य और समाज' को पाठकों ने पसंद किया। यह अंक भी इसी दिशा में एक और प्रयास है।

पल्लव

कालजयी कवि और उनका काव्य-संसार

मध्यकालीन साहित्य और आधुनिक हिंदी कविता के मर्मज्ञ डॉ. माधव हाड़ा की अनेक कृतियाँ सहृदय पाठकों और साहित्य के शोधार्थियों के बीच चर्चा का विषय रही हैं। विशेषकर 'पचरंग चोला पहन सखी री' में मीरां के जीवन, काव्य और उस समय के समाज को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने-समझने की जो खिड़की उन्होंने खोली, वह गहन अध्ययन और शोध का परिणाम है। इसी तरह का एक और बड़ा काम, पिछले तीन वर्षों (2021-2023) के दौरान राजपाल एंड संज़ से 'कालजयी कवि और उनका काव्य' शृंखला के अंतर्गत डॉ. माधव हाड़ा द्वारा संपादित दस महत्त्वपूर्ण किताबों के सेट का प्रकाशित होना है। तेरहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी के मध्य के दस महान कवियों--अमीर खुसरो, कबीर, रैदास, गुरु नानक, सूरदास, जायसी, तुलसीदास, मीरां, रहीम और बुल्ले शाह की विविध रचनाओं और उनकी प्रामाणिक जीवनी से सजी ये दसों कृतियाँ पाठकों के लिए एक अनमोल उपहार की तरह हैं। 'कालजयी कवि और उनका काव्य' सीरीज की इन कृतियों को देखकर मुझे राजपाल एंड संज द्वारा पूर्व में प्रकाशित 'उर्दू के लोकप्रिय शायर' और 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि' सीरीज की याद हो आई। वर्षों पहले शुरू की गई इन सीरीज की किताबें करोड़ों पाठकों के दिलों में बसी हुई हैं और आज भी खूब पढ़ी जाती हैं।

'कालजयी कवि और उनका काव्य' सीरीज के दसों कवि सैकड़ों वर्षों से भारतीय जनमानस में लोकप्रिय रहे हैं और आज भी उनकी रचनाओं की पठनीयता कम नहीं हुई है। इस सीरीज के पहले कवि हैं बहुमुखी प्रतिभा के धनी अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), जिनका असल नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन था। उनका जन्म एटा उत्तर प्रदेश के पटियाली नामक गाँव में हुआ था। उन्हें 'तूती-ए-हिन्द' भी कहा जाता था, लेकिन प्रसिद्ध हुए अमीर खुसरो के नाम से। खुसरो बारह वर्ष की अवस्था में शेर और रुबाई कहने लगे थे। छोटी उम्र में ही सूफ़ी धर्म की ओर आकृष्ट हुए और निजामुद्दीन औलिया के शिष्य हो गए। खुसरो को संगीत की हिन्दुस्तानी शैली का जनक माना जाता है--उन्होंने सितार और तबला बनाया। हिंदी में लिखने वाले वे पहले कवि थे और 'हिंदवी' शब्द का प्रयोग भी सबसे पहले उन्होंने ही किया। खुसरो की भारतीय लोकजीवन की पकड़ बहुत गहरी और मजबूत थी। उनकी हिंदवी में लिखी पहेलियाँ, मुकरियाँ, दोहे और गीत इस बात के सबूत हैं। सदियाँ बीत जाने के बाद भी ये भारतीय जनसाधारण की जबान पर चढ़े हुए हैं। माधव हाड़ा अनेक लेखकों और पुस्तकों का हवाला देते हुए बताते हैं कि अमीर खुसरो ने फारसी में निन्यानवे पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें कई लाख के लगभग शे'र थे। विडम्बना यह है कि फारसी के इस महान कवि की अधिकांश रचनाएँ अब अनुपलब्ध हैं। अब उनके केवल बाईस ग्रंथ मिलते हैं, जिनमें से एक ऐतिहासिक गद्य और शेष काव्य रचनाएँ हैं। खुसरो के एक ग्रंथ 'खालिकबारी' का जिक्र करते हुए माधव हाड़ा लिखते हैं कि खुसरो ने अपने इस ग्रंथ में 'हिंदी' शब्द का पाँच बार तथा 'हिंदवी' शब्द का तीस बार प्रयोग कर खड़ी बोली का एक तरह से नामकरण ही कर दिया, ''मूश चूहा गुर्बा बिल्ली मार नाग। सोजनो रिश्ता ब हिंदी सूई ताग।''

'हिंदवी' के बारे में खुसरो की राय उनके ग्रंथ 'नुह सिपहर' में स्पष्ट होती है, जिसमें उन्होंने अपने समय में प्रचलित हिन्दुस्तानी भाषाओं की सूची देते हुए लिखा है कि ''सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी, मराठी,

श्याम सुशील : सुपरिचित लेखक, कवि और समीक्षक।
ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एनक्लेव, दिल्ली-110096
मो. : 91-9871282170 ईमेल : shyamsushil13@gmail.com